बच्चे यहाँ बैठे भी कमाई कर रहे है। यह है सहज कमाई। बाप को और सृष्टि के चक्र को याद करते हो। तुम बच्चे सारी दुनिया से न्यारे हो। तुम जानते हो बाप को याद करनें से हम निरोगी बनेंगे कल्प पहले मिसल बाप की श्रीमत पर बाप को याद करते हो। ज्ञान है ही बाप पास। और कोई यह कह नां सके 5000 वर्ष पहले भी यह समझाया था। बाप ही कहते है मै कल्प के संगम पर आकर तुम बच्चों को परिचय देता हूँ। बाप रूप बसन्त भी है नां। ज्ञान का सागर भी हूँ कोई फिर इन्द्र भी कह देते है। समझते है इन्द्र बरसात बरसाता है। ऐसे तो है नही। ड्रामा अनुसार बिलकुल एक्यूरेट टाईम पर आते है। आकर बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों से श्रृंगार करते है। यह रत्न लाखों रूपयों का है। भक्ति मार्ग मे तो लाख और ही गुमा देते है। तुम समझते हो हम यहां आते ही है नर से नारायण बननें लक्ष्मी बननें। बाप कहते है मुझे याद करो तो इस योगाग्नी मे तुम्हारे सारे पाप भस्म हो जावेंगे। आर्शीवाद की तो बात ही नही। स्टूडेन्टस टीचर को कहेंगे क्या कि हमारे पर आशीर्वाद करो कि हम पास हो जावें। बाप स्वंय बच्चों का बाप व टीचर गुरू बनते है। फिर साथ ले जाते है। रूद्र माला मे पिरोनें बाद फिर विष्णु की माला मे बनते है। वैजयन्ती माला होती है नां। उनको रूण्ड माला कहते है। ब्राह्मणों की माला नही बनती। पुरूषार्थी है नां। जितना निश्चय मे रहेंगे याद करेंगे उतनें विकर्म विनाश होंगें। फिर नम्बरवार विष्णु पुरी मे आवेंगे। कोई तकलीफ नही भक्ति मार्ग मे कितनी तकलीफ होती है। तुम आधा कल्प के रोगी हो। वहां तुम निरोगी होंगे। कब अकाले मृत्यु नही होती। फलाना मरा ऐसे कहते नही है। मनुष्यों को क्या पता कि सतयुग क्या होता है। स्वर्ग होता कहां है यह भी किसको पता नही है। भारत स्वर्ग था यह गायन है परन्तु किसीको भी पता नही है। याद की यात्रा है मुख्य। जितना याद करेंगे उतना एवर हैल्दी बनेंगे। सजाओं से छूटना है। याद से विकर्म विनाश होंगें। सजायें खाकर फिर पाई पैसे का पद पाना वो किस काम का। चलते फिरते बाप को और वर्से को याद करते रहो। पवित्र भी रहना पड़े। नही तो बच्चे, बच्चे नही है। हंस और बगुला इकठे रह नही सकते। स्मृती आई और नष्टोमोहा होना पड़े। बाप कहते है मुझे जाननें से तुम मेरे दवारा सब कुछ जान जावेंगे। बाकी कुछ भी पूछने का रहेगा नही। अति सहज है। गायन है नां सैकिंड मे जनक को राजाई मिली। यहां तो सारी राजधानी स्थापन हो रही है कल्प पहले मुआफिक। है गुप्त। दाता गुप्त, ज्ञान गुप्त, वर्सा गुप्त। बुधी मे धारना करने का है। अभी नही समझते है आगे चल समझेंगे। लड़ाई के टाईम वैराग आवेगा। परन्तु इतनी जोर से योग की कमाई कर नही सकेंगे। पिछाड़ी वाले समय थोड़ा देख खूब याद की यात्रा पर लग पड़ेंगे। 50 वर्षों की मेहनत करनें वालों से पिछाड़ी मे आनें वाले गैलप कर लेंगे। अभी भी पिछाडी आनें वाले बहुत तीखे जा रहे है। परमपिता परमात्मा को ही ट्रुथ कहते है। रावण झूठ खण्ड बनाते है राम सच्च खण्ड बनाते है। ओम

9-2-67:- रात्री क्लास:- तुमको कितने बहन और कितने भाई है? जब कि जानते हो गाड फादर है तो समझना चाहिये कि यह फैमली है। यह हो गई बेहद की फैमली। गाते भी है ऐडम, ईव। हमारा बाप आदम हमारी मयां बीबी। तो फैमली हुई नां। फिर फैमली को सर्वव्यापी कैसे कह सकते है? अर्थ ही नही। भाई बहन कब होते है जरूर जब प्रजापिताब्रह्मा होंगें। वो निराकार आत्माओं का बाप है उनको प्रजापिता ब्रह्मा नही कहेंगे। प्रजापिता साकार हो जाता है। तो बाप एक है हम सभी भाई और बहनें है तो फिर विकार मे कैसे जा सकते है? गाते भी नां त्वमेव माताश्च पिता...तुम बच्चे जानते हो यह हम फैमली बैठे है। बाप बच्चों को ही समझाते है कि मै तुम्हारा रूहानी बाप हूँ। तुम पतित बन गये हो अब मै तुमको पावन बनाता हूँ। कितनी बड़ी फैमली है बाप दादा की। क्यों, किसीकी बुधी मे नही आता है। माया पत्थर बुधी बना देती है। फिर बाप आकर गाडरेज का ताला खोलते है। कहते है नां शल ईश्वर तुमको अच्छी बुधी देवें। बाप अच्छी बुधी देते है तो तुम अच्छे बन जाते हो। कब भी एक दो को दुःख मत दो। नही तो दुःखी होकर मरोगे। बहुत दण्ड भी मिलेगा। पद भी कम हो जावेगा। ऊंच ते ऊंच शिव परमात्मा फिर सैकिंड नम्बर मे ब्रह्मा। बाबा भी कहते है मै सौ किलधा, बच्चा एक ही हूँ। मुझ दवारा कितने बच्चे ऐडाप्ट किये जाते है। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिये। ओम